

Sanjai Chetan



कह दी कुछ ऐसी बात यहाँ,
जो बात हज़ारों तक पहुँचे

ख़्वाब



कुछ ख़्वाब बुने ऐसे हमने, वो ख़्वाब सितारों तक पहुँचे
कह दी कुछ ऐसी बात यहाँ, जो बात हज़ारों तक पहुँचे

छोटा सा हूँ अदना सा हूँ, पर सोच मेरी हिम्मतवर है
अब साथ चलो, चल कर देखो, मेरे हाथ मीनारों तक पहुँचे

कुछ लहर समन्दर के अंदर, कुछ लहर यहाँ मन के अंदर
तैराक जो मन पर तैर गए, हर बार किनारों तक पहुँचे

हम जाने थे है प्रेम वही, जहाँ लेन देन चूक जाता है
उस प्यार को कैसे प्यार कहें, जो प्यार बाज़ारों तक पहुँचे

कुछ ख़्वाब बुने ऐसे हमने, वो ख़्वाब सितारों तक पहुँचे
कह दी कुछ ऐसी बात यहाँ, जो बात हज़ारों तक पहुँचे

-संजय चेतन

फक्कड़



चिंता में दिन रात जलें क्यों,

ऐसा क्या हो जाएगा

क्या ले के हम साथ चले थे,

ऐसा क्या खो जाएगा

उम्र बढ़ी है, सूरत बदली,

सीरत अब भी वैसी है

वक्त जो खुद ही सदा बदलता,

हमें बदल ना पाएगा

जिनको हमने चाहा बदले,

पर चाहत ना बदली है

मन संग जो अरमान सुलगते,

कैसे कौन भुलायेगा

सत्ता बदली, नेता बदले,

पहली बार क्या बदले हैं

जनता फिर से बनी हैं मूर्ख,

कौन इसे समझाएगा

जुमलों से सरकारें बनती, दुनिया भर को मालूम है

चुन लोगे संजीदा नेता, तो जुमले कौन
सुनाएगा

आशिक्र, बॉस और सच्चा नेता, पूरे अपने कौल करे

कैसी बातें करता पागल, अब क्या हमें
रुलाएगा

खाली हो या माया हो संग, हम जैसे तो फक्कड़ हैं

चैन भी मन का जो खो देंगे, बाक़ी क्या रह
जाएगा

-संजय चेतन

कैसा है



के आँखों से पिलाने का यहाँ, दस्तूर कैसा है
और बिन पिए हमें साक्री, ये सूरूर कैसा है

हज़ारों के दिलों में तुम, यहाँ दिन रात रहते हो
कहो फिर खुद से इतना फासला, ऐ हुज़ूर कैसा है

ना तख़्त ओ ताज है, ना घर, ना ज़र है, ना ही ताक़त है
मगर मुफ़लिस फ़क़ीरों में, खुदा का नूर कैसा है

तुम्हारी शक़ल, क़द काठी, ये मज़हब, जात, या फिर मुल्क
तुमने थोड़ी कमाया है, तो फिर ये ग़ुरूर कैसा है

मुशाहिद है जो इक मुझ में, मेरा हर राज़ जाने है
मेरा ही अक़स है तो फिर, वो मुझसे दूर कैसा है

तबाही में सभी शामिल, यहाँ खुद अपनी नस्लों की

मुझे सब को जगाने का, मगर ये फ़ितूर कैसा है

-संजय चेतन

क्यूँ उदास बैठे हो



कुछ तो कहो, क्यूँ आज फिर, चुपचाप बैठे हो
माहौल ये ईद का सा है, क्यूँ उदास बैठे हो

औरों की तरह तुम भी, मेरा अब साथ छोड़ दो
बीता हुआ एक लम्हा हूँ, क्यूँ मेरे पास बैठे हो

सच में तुम्हारा था ही वो, तो ना छोड़ता तुमको
क्यूँ फिर लिए, उसकी यादों की बारात बैठे हो

मुद्त से रहा था इंतज़ार, मुलाकात का जिस से
वो आज सामने है तो, क्यूँ बदहवास बैठे हो

-संजय चेतन

अच्छा है



सपनों की बातें, सपनों में ही रहें
तो ज़्यादा अच्छा है
आँसू में पिघली आहें, पलकों में ही रहें

तो ज़्यादा अच्छा है

हमें मालूम है कि उसने, बुरा किया है मगर
ये घर की बात है, अगर अपनों ही में रहे

तो ज़्यादा अच्छा है

सुनके मुझसे, की सच की ही, हमेशा जीत होती है
वो बोला ये किताबी बात है, अगर पन्नों ही में रहे

तो ज़्यादा अच्छा है

फ़क़त जुबा से ही निकले, तो पुर-असर नहीं होती
दुआ वो चीज़ है जो, अगर दिल से भी निकले

तो ज़्यादा अच्छा है

-संजय चेतन

बोल रहे थे



समझे थे हम की आज वो,
जज़्बात बोल रहे थे
पर यार,
वो तो सुनी सुनाई, बात बोल रहे थे

लफजो पे उनके प्यार था,
हर रोज़ की तरह
आँखो से मगर
बदले हुए, हालात बोल रहे थे

हुआ मैं गैर, उसके वास्ते
अब आज से ये बात
मेंहदी से रचे उसके वो दोनों,
हाथ बोल रहे थे

जिनको मना, जिनको चुना,
वो सारे नेता आज
हम साथ थे, हम साथ हैं,
सब साथ बोल रहे थे

हुआ है अभी इक क़त्ल, ऐसा कुछ सुना मैंने
पर कुछ सिपाही ये ही बात, कल रात बोल रहे थे
समझे थे हम की आज वो, जज़्बात बोल रहे थे
पर यार, वो तो सुनी सुनाई, बात बोल रहे थे

-संजय चेतन

यात्रा



जीवन के रथ की यात्रा, कारण किसी
रुकती नहीं है
समक्ष* मर्त्यु के भी ये , संभ्रमित* पर
झुकती नहीं है

हो पाओगे स्वतन्त्र, स्वयं की
श्वाश से, हृदय चाप से
कर्तव्यों से सम्भव मगर उस पार भी
मुक्ति नहीं है

सुख की भी सीमा निर्धारित,
दुःख का भी अंत निश्चित है
पर जो समय को बाँध ले, ऐसी कोई युक्ति नहीं है

ईक्षा* नहीं, लिप्सा* नहीं
निद्रा है ना विश्राम है
सब खो गया है पर प्रीतम, स्मृति तेरी

दुखती नहीं है

समक्ष* - In front of

संप्रमत्त* - Confused

ईक्षा* - wish

लिप्सा* - Longing

-संजय चेतन

चाहत



तकल्लुफ़ अब भी है, अपना हमें, माने नहीं है
हमी में झाँक कर देखो, हम अनजाने नहीं हैं

तेरी चाहत में अक्सर, बंदगी तक भूल जाते हैं
अरे हम अक्स* हैं तेरा, परवाने नहीं हैं

मेरी चाहत की क्या मिकदार* है, तुझको समझनी है
इसे जो नाप लें, ऐसे भी पैमाने नहीं हैं

तुम्हें कल ही छुआ था ख़्वाब में, क्या अनजान बनते हो
तेरी आँखें कहें, हम कोई बेग़ाने नहीं हैं

मेरी दीवानगी का वास्ता, बस आप ही से हैं
ये दुनिया जानती है, आप ही जाने नहीं हैं

कहा है रहनुमा* तुमको, तुम्हारा काम अच्छा है
नयी ज़महूरियत* में, लोग दीवाने नहीं हैं

किया खर्चा बड़ा बंदूक पे, कुछ सोच कर देखो
यहाँ बच्चों को खाने के लिए, दाने नहीं हैं

-संजय चेतन

मिकदार* - Quantity
Democracy

अक्स* - Reflection

रहनुमा* - Leader

ज़महूरियत* -

मैं

मैं ज़िंदगी की हर रफ़्तार में हूँ
ध्यान में मैं, ज्ञान में, व्यवहार में हूँ

सभी की ज़िंदगी, जद्दोजहद है इक लड़ाई है
मगर हर जीत में मैं हूँ, मैं हर इक हार में हूँ

कभी देखा है चेहरा, इक नई मासूम दुल्हन का
वहाँ मैं हूँ, और मैं ही हुस्न के बाज़ार में हूँ

जो दोनो को, बुढ़ापे मौत तक में साथ रखता है
मेरा ही अक्स है, और मैं ही पहले प्यार में हूँ

शबद ओंकार कोरस में, अज्ञानो में मेरा स्वर है
मैं ही सब राग, दुर्गा, देश, और मल्हार में हूँ

तुम्हारे पाप पुण्यों में, मैं ही मोमन में काफ़िर में
हूँ गिरजे* में तुम्हारे, मंदिर और मज़ार में हूँ

मेरा विस्तार* अप्रकट* है मेरी गणना* जटिल* सी है
मैं शामिल शून्य में और सैकड़ों हज़ार में हूँ

मैं निर्गुण* ब्रह्म हूँ शाश्वत* सनातन* मूल है मेरा
असत के राज में और सत्य के साकार में हूँ

खुदी महसूस करके जान लो मुझको, मैं तुम ही हूँ
या फिर दिल से पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार में हूँ

अप्रकट*- Latent निर्गुण* - characteristics less शाश्वत*-
Eternal सनातन*-Ageless गिरजे* - Church विस्तार*-
Expansion गणना* - Calculation जटिल* - Complex

-संजय चेतन

बचपन

1970s childhood in north india



क्या

याद तुम्हें है आज भी जो, बचपन में मौज मनाते थे
हम रुपयों से ख़ाली थे पर, मस्ती की बीन बजाते थे

अम्माँ की साफ़ रसोई में, जहाँ नीचे बैठ के खाते थे
थोड़ा बच जाए खाना तो, पापा कितना गुराँते थे
गरमी के मौसम में पानी, कम ही आता था नलके में
मिलजुल कर फिर चारों भाई, जब हैंड पम्प से नहाते थे

घर के पीछे ही आमों का, इक बड़ा बाग़ था याद है क्या
अब जंगल वहाँ मकानों का, जहाँ तोड़ आम हम खाते थे

ये फ़्लॉडिंग बेड कहाँ थे तब, होते थे पलंग निवाड़ों के
और बानो वाली खाटों पे, जाड़ों में धूप तपाते थे

ये जेब खर्च क्या होता है, पिटवा देता था कॉन्सेप्ट
दस पाँच रुपए, सब बच्चों को, भले रिश्तेदार दे जाते थे

अरे बहुत बड़ा था घर अपना, अपने घर में छत होती थी
जब तक अँधेरा होता था, उस छत पे पतंग उड़ाते थे

होती थीं ख़ाली जेबें पर, थी तलब जो पेंच लड़ाने की
माँझा लाने को, बहना की, गुल्लक से रुपए चुराते थे

अब डॉलर घर और कारें हैं, हैं इज़्ज़त, मौज बहारें पर
क्या याद तुम्हें है आज भी, जो बचपन में मौज मनाते थे
डॉलर रुपयों से ख़ाली पर, मस्ती की बीन बजाते थे

-संजय चेतन

होली



ज़रा याद करो ओ साथी जब,
छत के ऊपर रंग होता था
तेरे हाथों में रंग होता था,
मेरी आँखों में रंग होता था

जब बाल तेरे बिखरे होते ,
पीला कुर्ता तंग होता था
रंगों के पीछे से ज़ाहिर,
तेरा कुछ गोरा अंग होता था

ज़रा याद करो ओ साथी जब,
छत के ऊपर रंग होता था
तेरे हाथों में रंग होता था,
मेरी आँखों में रंग होता था

यूँ ख़्वाब हमारे होते थे,
होली हो आज अकेले में
पर जहाँ जहाँ तू होती थी,

तेरा भाई भी संग होता था

ज़रा याद करो ओ साथी जब, छत के ऊपर रंग होता था
तेरे हाथों में रंग होता था, मेरी आँखों में रंग होता था
तेरी पाजेबों की छम छम संग, जीने* में संगम होता था
होली में भी दर्शित अपना, वहाँ प्रेम प्रसंगम होता था
ज़रा याद करो ओ साथी जब, छत के ऊपर रंग होता था
तेरे हाथों में रंग होता था, मेरी आँखों में रंग होता था

-संजय चेतन

जीने* - Staircase

मशहूर



हुए हो तुम बड़े मशहूर
हमें भी कुछ कमी ना है
बने हो तुम बड़े मगरूर*
तले जैसे जमी ना है

ये सब मक्कबूलियत* जो है
मेहरबानी खुदा वरना
है जग ज़ाहिर, के तुम जैसे
सुखानवर* की कमी ना है

तुम अपने आप खुद की
जिस तरह तारीफ करते हो
तुम्हे लगता भरोसा खुद पे भी,
इतना नहीं ना है

हमीं इक हैं जो आइना
हकुमत को दिखाते हैं
के हम जैसा भी दुनिया में
कोई दूजा कहीं ना है

हुआ रुखसत हूँ दुनिया से
के मैं कर फ़र्ज़ सब पूरे
ख़ुशी की बात है ये तो
कहीं कोई गमीं ना है

-संजय चेतन

मगरूर* - Arrogant मक्रबूलियत* - Fame सुखानवर* -
writer who composes rhymes

बेमतलब



मुझको सब गुजरे सालों के, जो भी कुछ मंज़र याद रहे
बे वजह हुए, बे-मतलब थे

घर के बाहर की पुलिया पे, अपने इक जिगरी यार के संग
घंटो जो हमने बातें की, और हंस हंस जिनपे पेट दुखा
वो पेट के बल बेमतलब थे
वो सारे पल बेमतलब थे

मुझको सब गुजरे सालों के, जो भी कुछ मंज़र याद रहे
बेवजह हुए बेमतलब थे

राजू त्यागी की शादी में, नाचे थे हम क्या मस्ती में
जिस नाच का जौहर याद रहा,
वो नाच भी बस बेमतलब था
वो मस्ती भी बेमतलब थी
मुझको सब गुजरे सालों के, जो भी कुछ मंज़र याद रहे

बेवजह हुए बेमतलब थे

दुल्हन की दूर की बहना से, जो आँख लड़ी, क्या आँख लड़ी
जो आँख लड़ी बेमतलब थी
उस तीन पहर की यारी में,
जो आँख नमी बेमतलब थी

मुझको सब गुजरे सालों के, जो भी कुछ मंज़र याद रहे
बेवजह हुए बेमतलब थे

इक गुमसम से लड़की के संग, बेसबब गुज़रते घंटे थे
बेकाम रोज़ हम मिलते थे, क्या पागल से हम बंदे थे
उसके हाथों पर जो मैंने,
इक दुआ लिखी बेमतलब थी
जो डाली उसकी ऊँगली में
तिनके कि रिंग बेमतलब थी

मुझको सब गुज़रे सालों के
जो भी कुछ मंज़र याद रहे
बेवजह हुए बेमतलब थे

-संजय चेतन

बदलाव



उनका रुख़सार

उसके पीछे
खिड़की का काँच

और दूर खड़ा
इक नीम का पेड़
उस नीम के सिर पे
सुबह का चाँद

**वो सब, कुछ भी अब
दिखता नहीं है**

आलिशान, ऊँची, इक इमारत है वहाँ
अब नीम की जगह

चाँद भी होगा कहीं
ये उम्मीद सी रहती है
उस खिड़की के काँच पे भी, गर्द सी रहती है

अब और क्या कहें
अब तो उनके चेहरे पे भी
शिकन सी रहती है

-संजय चेतन

चाँद



आज कल चाँद फिर पूरा निकलता है

पहली मुहब्बत है
दिल, अकेले से, कहाँ सम्मलता है
मेरे दोस्त को, प्यार हुआ है किसी से
मुझ से, सलाहें लेके चलता है

नशा, जो बूँद होकर
आपकी आँखों में पलता है
हमें प्यासा भी करता है
हमारा दिल भी जलता है

वो हर शाम को हर रोज़
नया ही रंग बदलता है
जो बग़लगीर था कल
आज नज़र बचा के चलता है

आज कल चाँद फिर पूरा निकलता है

-संजय चेतन

اردو ٲرڊو



ٲو ٲرڊو ٲوآلنے والوں کو
دہشآتگہرء کھآے ہں
آنہں آاہیل ٲو کھآے ہں
کمآرٲرء* کھآے ہں

آے ٲے ہمآآن آے سون
ٲوہلٲ-آے-آآن کو آےرے
کھں وو آوگ کوء ٲو
ٲر آسے ہم ٲرء* کھآے ہں

آے ٲآآے, ٲے ٲآآے
آسے ٲلءرے کے ٲآآے ہں
آو آنکو آوؤٲرءد* کر دے
آسے ٲےدء کھآے ہں

ٲوہٲٲآ کی آوٲا

तू बोलता है, मैं समझता हूँ
तुझे मेरा, मुझे तेरा
हमदर्द कहते हैं

-संजय चेतन

कमज़र्फ़ - Mean मुहिब ऐ वतन* - patriotism फ़र्द* - Duty खौफ़ज़द - Terrorize

कर देंगे



ज़ीस्त-ऐ-मसरूफ* -Busy life

वक़्त बाक़ी, जितना है
ज़ीस्त-ऐ-मसरूफ* में

हम दोस्तों के नाम कर देंगे

अब तुम कहो, और हम सुने
ना भी कहो, फिर भी सुनें

ये काम कर देंगे

मेरी वफ़ा का अब तू, बस ऐतबार कर
तेरे लिए हम, खुद को भी

बेनाम कर देंगे

तुझ से मिली हर चीज़ को तोहफ़ा समझते हैं
तू ज़हर भी दे, तो उसको भी हम

जाम कर देंगे

ज़ीस्त-ऐ-मसरूफ़* -Busy life

नज़रिया



मैयकश हो तुम, और हम भी हैं,
पर फ़र्क़ है बड़ा
यहाँ हमें तो सिर्फ़ ज़ाम नज़र आता है
और तुम्हें, तुम्हें बस दाम नज़र आता है

अब भी सँभल लो, छोड़ दो,
है ये रास्ता ग़लत
आख़िर में तुम्हें इस राह पे
आराम नज़र आता है
और हमें तुम्हारा
अंजाम नज़र आता है

है क्या औक़ात अदना संग की,
मगर इंसा की सोच है
किसी को यहाँ राम नज़र आता है
किसी को हराम नज़र आता है

हैं लाखों मुरीद उनके आज,

हर बात पे जिनकी
झूठ सारे आम नज़र आता है
और सच बराये नाम नज़र आता है

कोशिश ईमानदार हो, तो हर गरीब को
सब तरफ़ तुम्हारा काम नज़र आता है
और साहब को बस
कोहराम नज़र आता है

अपनी सियासत और है, उनकी जुदा उनको
बस अपना नाम नज़र आता है
और हमें अवाम नज़र आता है

-संजय चेतन

मेरा इश्क़



किस्मत को कितनी बार
मैं सवाँरता रहा
वो मुझसे दूर हो गया
और मैं, पुकारता रहा

जब गर्दिशों की गर्द
मेरी किस्मत पे पड़ रही
वक़्त फेंकता रहा
और मैं बुहारता रहा

बाज़ी हमारे इश्क़ की
मैंने सजाई यूँ
वो रोज़ जीतते रहे
मैं रोज़ हारता रहा

उसको नहीं है, पर मेरी
आँखों में शर्म है
चुप ही रहा मैं जब

वो तंज मारता रहा

-संजय चेतन

कड़वाहट



हर बार जब जब तुम
मुझे दुत्कार देते हो
बस जान तुम ये लो
के मुझको मार देते हो

वजह कुछ भी नहीं है
मूढ़-ए-आ भी और ही कुछ है
न ख्वाहिश है नतीजे की
की चाहत और ही कुछ है
ज़माने भर के सच और झूठ का
तुम आसरा लेकर
बहस को जीतने खातिर
तुम मुझको हार देते हो

मेरी हर साल गिर्हा पर
बड़ा तुम जश्न करते हो
तुम्हारी शान में
पूरा तुम अपना शौक्र करते हो
चलेंगे तीर ओ तंज हज़ार

होगा इक और दिन दुश्वार
वोहि दोगे मुझे तोहफ़ा
जो तुम हर बार देते हो

हर बार जब जब तुम
मुझे दुत्कार देते हो
ये बस तुम जान लो
थोड़ा सा मुझको मार देते हो
-संजय चेतन

पंछी



कुछ भी नज़र ना आये
कैसे ये बादल छाये
तेरे सहारे ओ मालिक
पंछी तो उड़ता जाए
वो रास्ता भूला कंहा, तू ही बता अब वो जाये कंहा

थोड़ा थका है घबराया
सच्चाई मेहनत का जाया
अपने परो को भी जाने
ताक़त भी अपनी पहचाने
खुद से भरोसा ना जाए
कैसे ना खुद को समझाए
तेरे सहारे ओ मालिक
पंछी तो उड़ता जाए
वो रास्ता भूला कंहा, तू ही बता अब वो जाये कंहा

तिनको से बुन के घर जोड़ा
अपनों से नाता भी जोड़ा

इन सब की खातिर ही इसने
इस तानेबाने को छोड़ा
अब तो सुबह बस हो जाए
रात ये काली सो जाए
तेरे सहारे ओ मालिक
पंछी तो उड़ता जाए
वो रास्ता भूला कंहा, तू ही बता अब वो जाये कंहा

- संजय चेतन

नया साल



गए साल को क्या रोकना,
अब छोड़ दो, जाने भी दो
ऐसे के, इसके जाने की,
हल्की सी भी, आहट ना हो
नए साल को, सँभाल लो,
कुछ इस तरह, से थाम लो
आशाओं की भरमार हो,
बस छोटी सी टिमटिमाहट ना हो

इक बार, फिर से झाड़ लो,
रिश्तों पे छायी, धूल को
रिश्तों में फिर से, तय करो,
बस प्यार हो, बनावट ना हो
बेहतर बगैर बरतरी , बेकार है,

कोशिश करो
सामान खाने पीने का,
खालिस रहे, मिलावट ना हो
नए साल ऐसा भी करो,
के इक ज़रूरतमंद को

इस तरह, से दान दो,
जिसकी कहीं, सुगबगाहट ना हो
देखो गलत को, पाप को, गांधी के बन्दर ना बनो
इस साल ऐसे सच कहो, की शोर हो, खुस्पसुसहट ना हो

नए साल को संभाल लो, कुछ इस तरह से थाम लो
आशाओं की भरमार हो, बस छोटी सी टिमटिमाहट ना हो

-संजय चेतन

कौन पागल?



क्या हूँ पागल यहाँ इक मैं, याफिर
पागल जमात है
अजी ये खेल, खिलाड़ियों का है,
या बंदर बिसात है

है पूछा फिर से उसने तंज़ से
”क्या दिखता नहीं मुझे”
अब मानू बुरा क्या इस बात का
अंधे की बात है

हम तो गये थे रोकने
खाते थे वो ज़हर
वो दुश्मन हुए इस इक बात पे
अब ये हालात हैं

-संजय चेतन

जलाशय



समय की धारा हर पल, शिख पे बरस जाती है
मेरे जीवन को भिगों कर, नीचे उतर जाती है
अनुभव के जलाशय मैं, सिहरा सा खड़ा हूँ मैं
इक दिन तो समा ही लेगा समय
अभी सिर्फ़ वक्ष तक डूबा हूँ मैं

-संजय चेतन